



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मकुंडली

RITESH KAKADE

15/12/1981 6:0 AM

Mumbai, Maharashtra India

प्राथमिक तपशील

प्राथमिक तपशील

पंचांग तपशील

| | |
|---------------|--------------------------|
| जन्म तारीख | 15/12/1981 |
| जन्माची वेळ | 6:0 |
| जन्माचे स्थान | Mumbai,Maharashtra India |
| अक्षांश | 25 N 19 |
| रेखांश | 82 E 20 |
| वेळ विभाग | 5.5 |
| अयनांश | 23:36:17 |
| सूर्योदय | 06:38:26 |
| सूर्यास्त | 17:12:52 |

| | |
|---------|-------------|
| तिथी | कृष्ण पंचमी |
| योग | वैधृती |
| नक्षत्र | आश्लेषा |
| करण | कौलव |

ज्योतिषविषयक तपशील

| | |
|----------------|---------|
| वर्ण | विप्र |
| वश्य | जलचर |
| योनी | मार्जर |
| गण | राक्षस |
| नाडी | अंत |
| जन्म राशी | कर्क |
| राशी स्वामी | चंद्र |
| नक्षत्र | आश्लेषा |
| नक्षत्र स्वामी | बुध |
| चरण | 1 |
| युग्जा | मध्य |
| तत्व | जल |
| नांवाची अक्षरे | डी |
| पाया | चांदी |
| लग्न | वृश्चिक |
| लग्न स्वामी | मंगळ |

घात चक्र

| | |
|---------|---------|
| महिना | पौष |
| तिथी | 2,7,12 |
| दिवस | बुधवार |
| नक्षत्र | अनुराधा |
| योग | व्याघात |
| करण | नाग |
| प्रहर | 1 |
| चंद्र | 12 |

ग्रह स्थिती

| ग्रह | वक्री | जन्म राशी | अंश | राशी स्वामी | नक्षत्र | नक्षत्र स्वामी | गृह |
|-----------------|-------|-----------|----------|-------------|-----------------|----------------|-----|
| सूर्य | | वृश्चिक | 29:20:39 | मंगळ | ज्येष्ठा | बुध | 1 |
| चंद्र | | कर्क | 19:41:21 | चंद्र | आश्लेषा | बुध | 9 |
| मंगळ | | कन्या | 05:55:57 | बुध | उत्तरा फाल्गुनी | सूर्य | 11 |
| बुध | | धनु | 01:47:54 | गुरु | मूळ | केतू | 2 |
| गुरु | | तूळ | 09:44:30 | शुक्र | स्वाती | राहू | 12 |
| शुक्र | | मकर | 10:14:06 | शनी | श्रवण | चंद्र | 3 |
| शनी | | कन्या | 26:44:48 | बुध | चित्रा | मंगळ | 11 |
| राहू | R | कर्क | 00:28:59 | चंद्र | पुनर्वसू | गुरु | 9 |
| केतू | R | मकर | 00:28:59 | शनी | उत्तराषाढा | सूर्य | 3 |
| वर्चस्व असणारां | | वृश्चिक | 19:56:53 | मंगळ | ज्येष्ठा | बुध | 1 |



सूर्य
वृश्चिक
ज्येष्ठा

लाभकारी



चंद्र
कर्क
आश्लेषा

योगकारक



मंगळ
कन्या
उत्तरा फाल्गुनी

तटस्थ



बुध
धनु
मूळ

अनिष्टकारी



गुरु
तूळ
स्वाती

लाभकारी



शुक्र
मकर
श्रवण

अनिष्टकारी



शनी
कन्या
चित्रा

तटस्थ



राहू
कर्क
पुनर्वसू

--

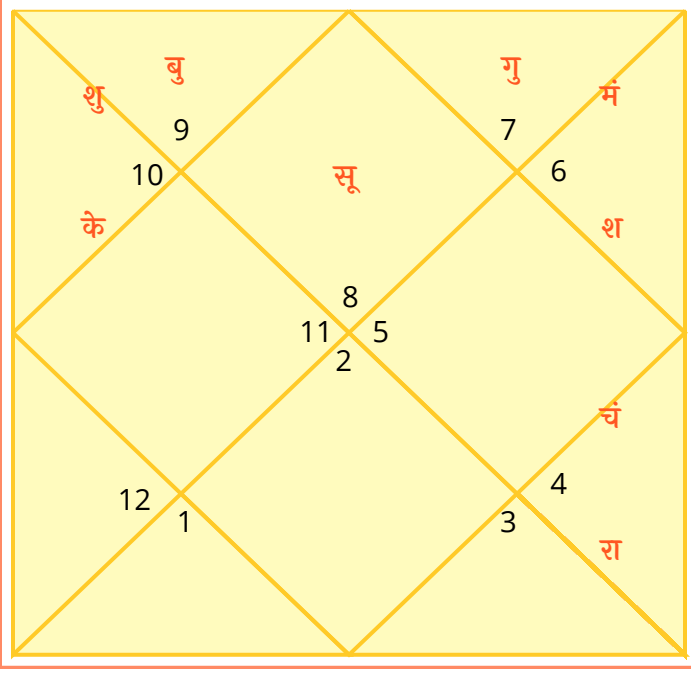


केतू
मकर
उत्तराषाढा

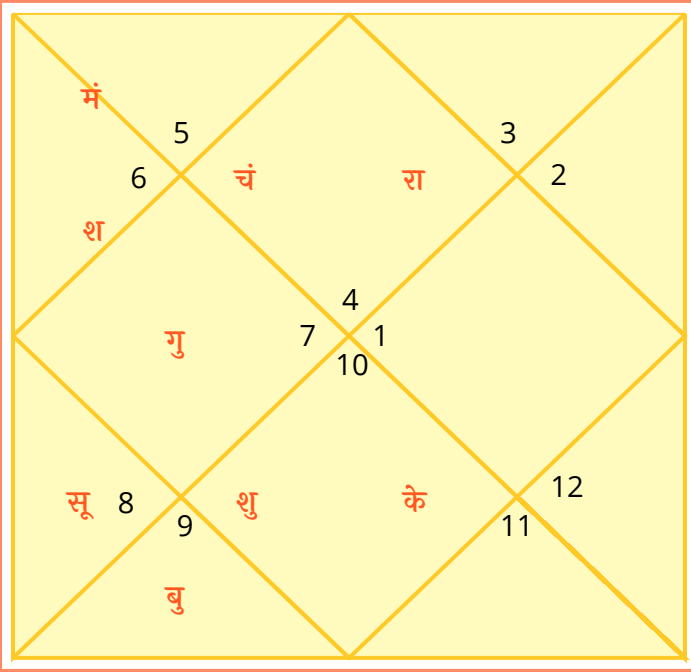
--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

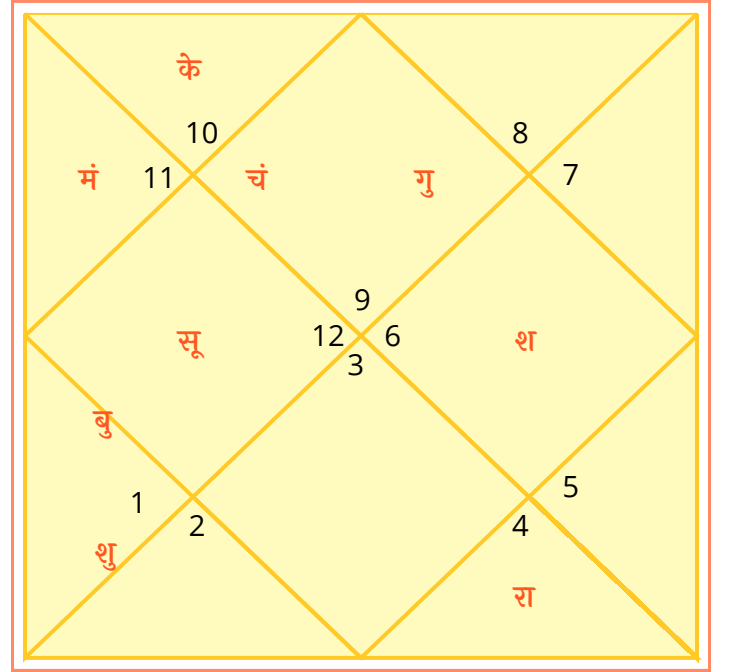


व्यक्तीच्या जन्मवेळी क्षितिजाच्या पूर्वेस जी रास अवतरित होते तीच त्या व्यक्तीची लग्न रास मानली जाते. जन्म कुंडली मध्ये बारा भाव असतात, ह्या बारा भावांमधील प्रथम भावाला लग्न भाव ह्या नावाने संबोधिले जाते, कुंडलीमधील बाकी सर्व भावांच्या तुलनेत लग्न भावाला सर्वाधिक महत्व आहे. लग्न भाव बालकाचा स्वभाव, रुची, वैशिष्ट्ये आणि चारित्र्यातील गुणांला प्रकट करतो.



चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली नंतर ज्या राशी मध्ये चंद्र असेल त्या राशीला लग्न मानून आणखी एका कुंडलीचा निरमान केला जातो ज्याला आपण चंद्र कुंडली म्हणतो, फलित ज्योतिष शास्त्रात चंद्र कुंडलीस लग्न कुंडली इतकेच महत्व देण्यात आलेले आहे.

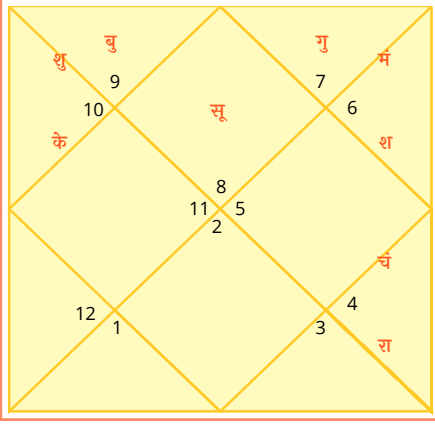


नवमांश कुंडली

नवांश कुंडली नऊ भागात विभागली जाते, ज्याच्या आधारावर जन्म कुंडली चे विवेचन होते. नवांश कुंडली मधील ग्रह उत्तम स्थितीत व उच्च असल्यास त्यास वर्गोत्तम स्थिती उत्पन्न होते व व्यक्ती शारीरिक व आत्मिक रित्या स्वस्थ आणि शुभदायक स्थितीस प्राप्त करतो.

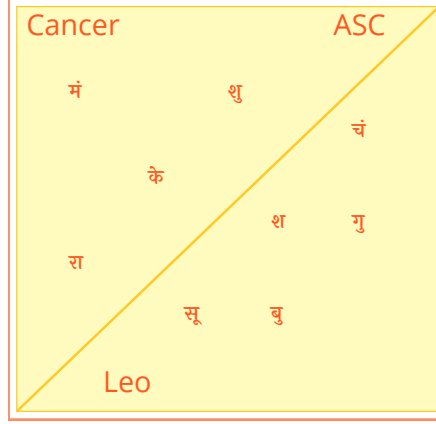
वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली



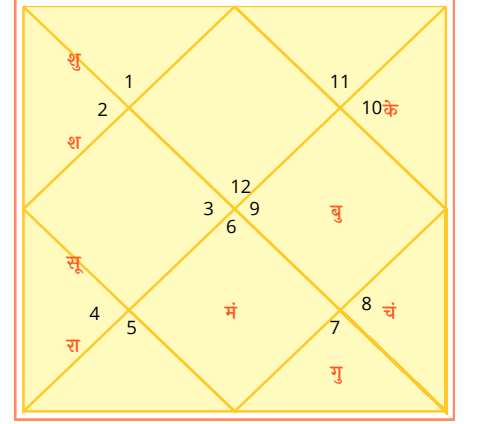
शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली



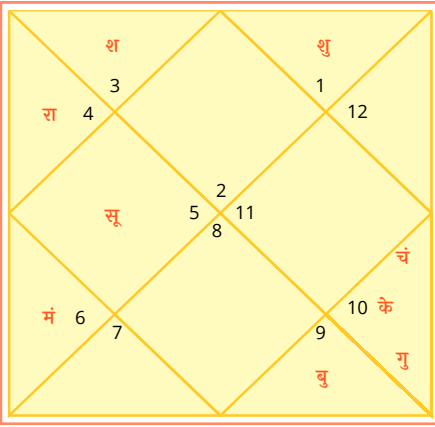
वित्त, धन-सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली



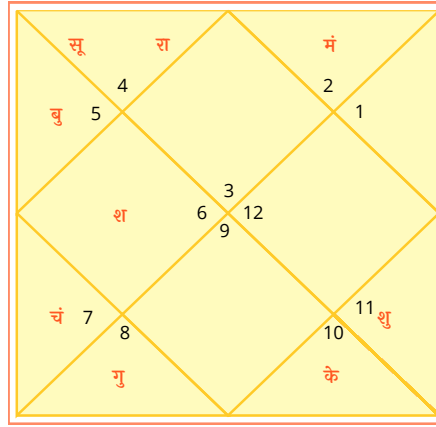
भाऊ बहीण

चतुर्थांश कुंडली



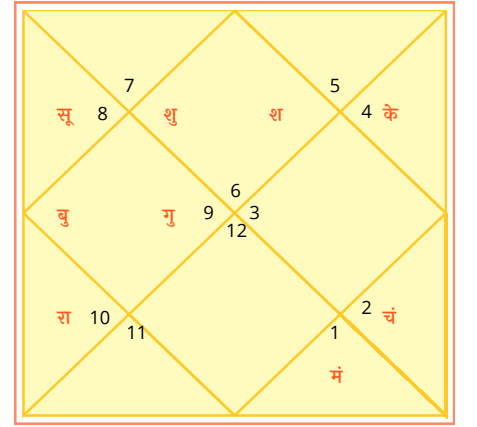
भाग्य

पंचमांश कुंडली



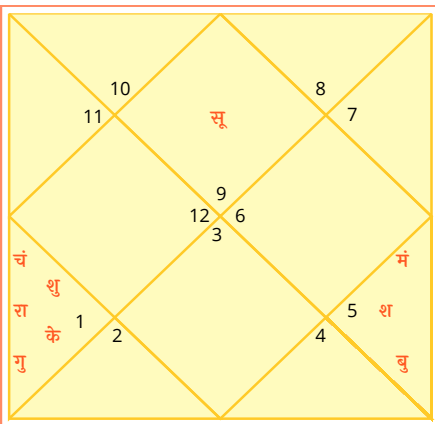
आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली



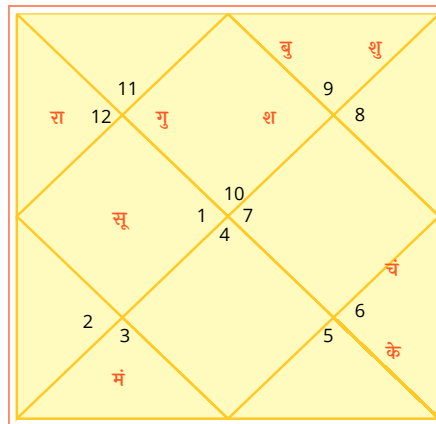
सन्तान

अष्टमांश कुंडली



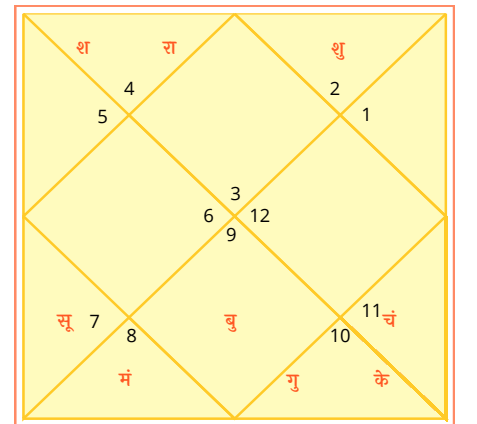
आयु

दशमांश कुंडली



व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादश कुंडली



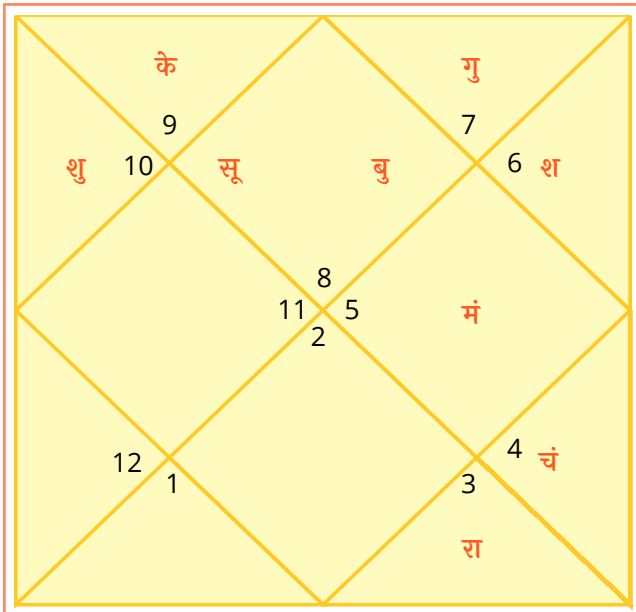
माता पिता, पितृक सुख

भाव सन्धि

लग्न - 19:56:53 दशम भाव मध्य - 29:14:28

| गृह | जन्म राशी | भाव मध्य | जन्म राशी | भाव संधि |
|-----|-----------|----------|-----------|----------|
| 1 | वृश्चिक | 19:56:53 | धनु | 06:29:49 |
| 2 | धनु | 23:02:45 | मकर | 09:35:40 |
| 3 | मकर | 26:08:36 | कुंभ | 12:41:32 |
| 4 | कुंभ | 29:14:28 | मीन | 12:41:32 |
| 5 | मीन | 26:08:36 | मेष | 09:35:40 |
| 6 | मेष | 23:02:45 | वृषभ | 06:29:49 |
| 7 | वृषभ | 19:56:53 | मिथुन | 06:29:49 |
| 8 | मिथुन | 23:02:45 | कर्क | 09:35:40 |
| 9 | कर्क | 26:08:36 | सिंह | 12:41:32 |
| 10 | सिंह | 29:14:28 | कन्या | 12:41:32 |
| 11 | कन्या | 26:08:36 | तूळ | 09:35:40 |
| 12 | तूळ | 23:02:45 | वृश्चिक | 06:29:49 |

चलित कुंडली



लग्न कुंडली चे शोधन चलित कुंडली आहे , फरक फक्त इतकाच आहे कि लग्न कुंडली हे दर्शवते कि जन्मवेळी लग्न काय आहे व सर्व ग्रह कोणत्या राशी मध्ये विचरण करीत आहेत व चलित कुंडली हे स्पष्ट करते कि जन्मवेळी कोणता भाव कोणत्या राशीचा प्रभाव आहे व कोणत्या भावास कोणता ग्रह प्रभावित करीत आहे

वविम्शोत्तरी दशा - I

बुध

6-2-1978 14:11
6-2-1995 20:11

केतू

6-2-1995 20:11
6-2-2002 14:11

शुक्र

6-2-2002 14:11
6-2-2022 14:11

| | |
|-------|-----------------|
| बुध | 5-7-1980 5:38 |
| केतू | 2-7-1981 10:35 |
| शुक्र | 2-5-1984 7:35 |
| सूर्य | 8-3-1985 18:41 |
| चंद्र | 8-8-1986 5:11 |
| मंगळ | 5-8-1987 10:8 |
| राहू | 21-2-1990 19:26 |
| गुरु | 29-5-1992 17:2 |
| शनी | 6-2-1995 20:11 |

| | |
|-------|-----------------|
| केतू | 5-7-1995 23:38 |
| शुक्र | 4-9-1996 2:38 |
| सूर्य | 9-1-1997 22:44 |
| चंद्र | 11-8-1997 0:14 |
| मंगळ | 7-1-1998 3:41 |
| राहू | 25-1-1999 15:59 |
| गुरु | 1-1-2000 13:35 |
| शनी | 9-2-2001 9:14 |
| बुध | 6-2-2002 14:11 |

| | |
|-------|-----------------|
| शुक्र | 8-6-2005 2:11 |
| सूर्य | 8-6-2006 8:11 |
| चंद्र | 7-2-2008 2:11 |
| मंगळ | 8-4-2009 5:11 |
| राहू | 7-4-2012 23:11 |
| गुरु | 7-12-2014 23:11 |
| शनी | 6-2-2018 14:11 |
| बुध | 7-12-2020 11:11 |
| केतू | 6-2-2022 14:11 |

सूर्य

6-2-2022 14:11
7-2-2028 2:11

चंद्र

7-2-2028 2:11
6-2-2038 14:11

मंगळ

6-2-2038 14:11
6-2-2045 8:11

| | |
|-------|------------------|
| सूर्य | 27-5-2022 3:59 |
| चंद्र | 25-11-2022 18:59 |
| मंगळ | 2-4-2023 15:5 |
| राहू | 25-2-2024 8:29 |
| गुरु | 13-12-2024 13:17 |
| शनी | 25-11-2025 12:59 |
| बुध | 2-10-2026 0:5 |
| केतू | 6-2-2027 20:11 |
| शुक्र | 7-2-2028 2:11 |

| | |
|-------|-----------------|
| चंद्र | 7-12-2028 11:11 |
| मंगळ | 8-7-2029 12:41 |
| राहू | 7-1-2031 9:41 |
| गुरु | 8-5-2032 9:41 |
| शनी | 7-12-2033 17:11 |
| बुध | 9-5-2035 3:41 |
| केतू | 8-12-2035 5:11 |
| शुक्र | 7-8-2037 23:11 |
| सूर्य | 6-2-2038 14:11 |

| | |
|-------|----------------|
| मंगळ | 5-7-2038 17:38 |
| राहू | 24-7-2039 5:56 |
| गुरु | 29-6-2040 3:32 |
| शनी | 7-8-2041 23:11 |
| बुध | 5-8-2042 4:8 |
| केतू | 1-1-2043 7:35 |
| शुक्र | 2-3-2044 10:35 |
| सूर्य | 8-7-2044 6:41 |
| चंद्र | 6-2-2045 8:11 |

वविंशोत्तरी दशा - ॥

| राहू | | गुरु | | शनी | |
|----------------|------------------|----------------|-----------------|----------------|------------------|
| 6-2-2045 8:11 | | 6-2-2063 20:11 | | 6-2-2079 20:11 | |
| 6-2-2063 20:11 | | 6-2-2079 20:11 | | 6-2-2098 14:11 | |
| राहू | 20-10-2047 12:23 | गुरु | 27-3-2065 0:59 | शनी | 9-2-2082 15:14 |
| गुरु | 15-3-2050 2:47 | शनी | 8-10-2067 8:11 | बुध | 19-10-2084 18:23 |
| शनी | 19-1-2053 1:53 | बुध | 13-1-2070 5:47 | केतू | 28-11-2085 14:2 |
| बुध | 8-8-2055 11:11 | केतू | 20-12-2070 3:23 | शुक्र | 28-1-2089 5:2 |
| केतू | 25-8-2056 23:29 | शुक्र | 20-8-2073 3:23 | सूर्य | 10-1-2090 4:44 |
| शुक्र | 26-8-2059 17:29 | सूर्य | 8-6-2074 8:11 | चंद्र | 11-8-2091 12:14 |
| सूर्य | 20-7-2060 10:53 | चंद्र | 8-10-2075 8:11 | मंगळ | 19-9-2092 7:53 |
| चंद्र | 19-1-2062 7:53 | मंगळ | 13-9-2076 5:47 | राहू | 27-7-2095 6:59 |
| मंगळ | 6-2-2063 20:11 | राहू | 6-2-2079 20:11 | गुरु | 6-2-2098 14:11 |

वर्तमान दशा



| दशेचे नांव | ग्रह | आरम्भ तिथि | सम्पति तिथि |
|---------------|-------|-----------------|----------------|
| महादशा | शुक्र | 6-2-2002 14:11 | 6-2-2022 14:11 |
| अंतर्दशा | शनी | 7-12-2014 23:11 | 6-2-2018 14:11 |
| प्रत्यंतर दशा | राहू | 15-3-2017 21:8 | 5-9-2017 8:59 |
| सूक्ष्म दशा | गुरु | 10-4-2017 21:43 | 4-5-2017 0:54 |

* दशा समाप्तीची तारीख दर्शवते

योगिनी दशा - I

भ्रमरी (4 वर्ष)

18-1-1981 8:52
18-1-1985 8:52

भद्रिका (5 वर्ष)

18-1-1985 8:52
18-1-1990 8:52

उल्का (6 वर्ष)

18-1-1990 8:52
18-1-1996 8:52

भ्रमरी 29-6-1981 16:52
भद्रिका 18-1-1982 14:52
उल्का 19-9-1982 2:52
सिद्धा 30-6-1983 4:52
संकेता 19-5-1984 20:52
मंगला 29-6-1984 10:52
पिंगळा 18-9-1984 14:52
घन्या 18-1-1985 8:52

भद्रिका 29-9-1985 0:22
उल्का 30-7-1986 9:22
सिद्धा 20-7-1987 11:52
संकेता 29-8-1988 7:52
मंगला 19-10-1988 1:22
पिंगळा 28-1-1989 12:22
घन्या 29-6-1989 16:52
भ्रमरी 18-1-1990 8:52

उल्का 18-1-1991 14:52
सिद्धा 19-3-1992 17:52
संकेता 19-7-1993 17:52
मंगला 18-9-1993 14:52
पिंगळा 18-1-1994 8:52
घन्या 19-7-1994 23:52
भ्रमरी 20-3-1995 11:52
भद्रिका 18-1-1996 8:52

सिद्धा (7 वर्ष)

18-1-1996 8:52
18-1-2003 8:52

संकेता (8 वर्ष)

18-1-2003 8:52
18-1-2011 8:52

मंगला (1 वर्ष)

18-1-2011 8:52
18-1-2012 8:52

सिद्धा 29-5-1997 12:22
संकेता 18-12-1998 16:22
मंगला 27-2-1999 16:52
पिंगळा 19-7-1999 17:52
घन्या 17-2-2000 19:22
भ्रमरी 27-11-2000 21:22
भद्रिका 17-11-2001 23:52
उल्का 18-1-2003 8:52

संकेता 28-10-2004 16:52
मंगला 17-1-2005 20:52
पिंगळा 29-6-2005 4:52
घन्या 27-2-2006 16:52
भ्रमरी 18-1-2007 8:52
भद्रिका 28-2-2008 4:52
उल्का 29-6-2009 4:52
सिद्धा 18-1-2011 8:52

मंगला 28-1-2011 12:22
पिंगळा 17-2-2011 19:22
घन्या 20-3-2011 5:52
भ्रमरी 29-4-2011 19:52
भद्रिका 19-6-2011 13:22
उल्का 19-8-2011 10:22
सिद्धा 29-10-2011 10:52
संकेता 18-1-2012 8:52

योगिनी दशा - II

पिंगळा (2 वर्ष)

18-1-2012 8:52
18-1-2014 8:52

घन्या (3 वर्ष)

18-1-2014 8:52
18-1-2017 8:52

भ्रमरी (4 वर्ष)

18-1-2017 8:52
18-1-2021 8:52

पिंगळा 27-2-2012 22:52

घन्या 28-4-2012 19:52

भ्रमरी 18-7-2012 23:52

भद्रिका 28-10-2012 10:52

उल्का 27-2-2013 4:52

सिद्धा 19-7-2013 5:52

संकेता 28-12-2013 13:52

मंगला 18-1-2014 8:52

घन्या 19-4-2014 16:22

भ्रमरी 19-8-2014 10:22

भद्रिका 18-1-2015 14:52

उल्का 20-7-2015 5:52

सिद्धा 18-2-2016 7:22

संकेता 18-10-2016 19:22

मंगला 18-11-2016 5:52

पिंगळा 18-1-2017 8:52

भ्रमरी 29-6-2017 16:52

भद्रिका 18-1-2018 14:52

उल्का 19-9-2018 2:52

सिद्धा 30-6-2019 4:52

संकेता 19-5-2020 20:52

मंगला 29-6-2020 10:52

पिंगळा 18-9-2020 14:52

घन्या 18-1-2021 8:52

भद्रिका (5 वर्ष)

18-1-2021 8:52
18-1-2026 8:52

उल्का (6 वर्ष)

18-1-2026 8:52
18-1-2032 8:52

सिद्धा (7 वर्ष)

18-1-2032 8:52
18-1-2039 8:52

भद्रिका 29-9-2021 0:22

उल्का 30-7-2022 9:22

सिद्धा 20-7-2023 11:52

संकेता 29-8-2024 7:52

मंगला 19-10-2024 1:22

पिंगळा 28-1-2025 12:22

घन्या 29-6-2025 16:52

भ्रमरी 18-1-2026 8:52

उल्का 18-1-2027 14:52

सिद्धा 19-3-2028 17:52

संकेता 19-7-2029 17:52

मंगला 18-9-2029 14:52

पिंगळा 18-1-2030 8:52

घन्या 19-7-2030 23:52

भ्रमरी 20-3-2031 11:52

भद्रिका 18-1-2032 8:52

सिद्धा 29-5-2033 12:22

संकेता 18-12-2034 16:22

मंगला 27-2-2035 16:52

पिंगळा 19-7-2035 17:52

घन्या 17-2-2036 19:22

भ्रमरी 27-11-2036 21:22

भद्रिका 17-11-2037 23:52

उल्का 18-1-2039 8:52

योगिनी दशा - III

संकेता (8 वर्ष)

18-1-2039 8:52
18-1-2047 8:52

मंगला (1 वर्ष)

18-1-2047 8:52
18-1-2048 8:52

पिंगळा (2 वर्ष)

18-1-2048 8:52
18-1-2050 8:52

| | |
|---------|------------------|
| संकेता | 28-10-2040 16:52 |
| मंगला | 17-1-2041 20:52 |
| पिंगळा | 29-6-2041 4:52 |
| धन्या | 27-2-2042 16:52 |
| भ्रमरी | 18-1-2043 8:52 |
| भद्रिका | 28-2-2044 4:52 |
| उल्का | 29-6-2045 4:52 |
| सिद्धा | 18-1-2047 8:52 |

| | |
|---------|------------------|
| मंगला | 28-1-2047 12:22 |
| पिंगळा | 17-2-2047 19:22 |
| धन्या | 20-3-2047 5:52 |
| भ्रमरी | 29-4-2047 19:52 |
| भद्रिका | 19-6-2047 13:22 |
| उल्का | 19-8-2047 10:22 |
| सिद्धा | 29-10-2047 10:52 |
| संकेता | 18-1-2048 8:52 |

| | |
|---------|------------------|
| पिंगळा | 27-2-2048 22:52 |
| धन्या | 28-4-2048 19:52 |
| भ्रमरी | 18-7-2048 23:52 |
| भद्रिका | 28-10-2048 10:52 |
| उल्का | 27-2-2049 4:52 |
| सिद्धा | 19-7-2049 5:52 |
| संकेता | 28-12-2049 13:52 |
| मंगला | 18-1-2050 8:52 |

धन्या (3 वर्ष)

18-1-2050 8:52
18-1-2053 8:52

* दशा समाप्तीची तारीख दर्शवते

| | |
|---------|------------------|
| धन्या | 19-4-2050 16:22 |
| भ्रमरी | 19-8-2050 10:22 |
| भद्रिका | 18-1-2051 14:52 |
| उल्का | 20-7-2051 5:52 |
| सिद्धा | 18-2-2052 7:22 |
| संकेता | 18-10-2052 19:22 |
| मंगला | 18-11-2052 5:52 |
| पिंगळा | 18-1-2053 8:52 |

शुभाशुभ ज्ञान

1

भाग्यांक

6

मूलांक

4

नामांक

| | |
|---------------|----------------------------|
| तुमचे नांव | Ritesh Kakade |
| जन्म तारीख | 15-12-1981 |
| मूलांक | 6 |
| मूलांक स्वामी | शुक्र |
| मित्र अंक | 4,3,9 |
| सम अंक | 2,5,7 |
| शत्रु अंक | 1,8 |
| शुभ दिवस | गुरुवार, मंगळवार, शुक्रवार |
| शुभ रत्न | हीरा, ओपल |
| शुभ उपरत्न | जिरकॉन , पांढरा नीलम |
| शुभ देवता | देवी |
| शुभ धातु | चांदी |
| शुभ रंग | पांढरा |
| शुभ मंत्र | ओम शुभ शुक्राय नमः |

6

तुमच्याबद्दल

तुमचा मूलांक 6 आहे. त्याच्यावर सत्ता गाजवणारा ग्रह शुक्र आहे. मूलांक 6च्या प्रभावामुळे, तुमच्याकडे चुंबकीय आकर्षण उपस्थित असेल. तुम्ही मनमिळाऊ वृत्तीचे आणि मित्रांवर प्रेम करणारे असाल. या गुणांमुळे तुम्ही नेहेमी लोकांचे आवडते असाल. सौंदर्य आणि सुंदर गोष्टींकडे आकर्षित होणे तुमच्यासाठी नैसर्गिक असेल. तुम्ही विरुद्ध लिंग व्यक्तीवर लुब्ध व्हाल आणि सुंदर स्त्रिया/पुरुष यांच्याशी संबंध ठेवणे आणि त्यांच्याशी गप्पागोष्टी करणे हे तुमच्या स्वभावात असेल. तुम्हाला फाईन आर्टमध्ये रुची असेल, जो तुम्ही तुमचे करीयर किंवा व्यवसाय म्हणूनही निवडू शकाल. तुम्हाला संगीत-साहित्य, पेंटिंग्ज, आणि शिल्पकला इत्यादीची आवड असेल. तुम्हाला उंची वस्त्रे आणि उत्तम रितीने सजवलेली घरे आकर्षित करतील. तुम्हाला तुमच्या पाहुण्यांचे आदरातिथ्य करण्यात गर्व वाटेल. तुम्हाला तुमच्या घरातील आणि ऑफीसमधील सर्व वस्तु उत्तम तऱ्हेने सजवून ठेवणे आणि निवडक फर्निचर, पडदे इत्यादि संभाळून ठेवणे प्रिय असेल. स्वभावाने तुम्ही किंचीत माथेफिरू असाल. तुम्ही अशी खात्री करण्याचा प्रयत्न कराल कि जो कोणी व्यक्ती तुमच्याशी बोलत आहे त्याला तुमचे विचार पटलेले आहेत. तुमच्या विचारांशी चिकटून राहाणे आणि मत्सरी असणे हे सुद्धा तुमच्या स्वभावाचा भाग आहे. तुमच्यासाठी कामामध्ये स्पर्धकाला सहन करणे कठीण जाते. यामुळे तणाव आणि अपराधी भावना येऊ शकते. तुम्ही तुमचे हृदय जिंकण्याचे कौशल्य कायम राखाल. तुमचे नेहेमीच पुष्कळ मित्र असतील कारण तुम्ही इतरांचा स्नेह जिंकण्यात पटाईत असाल.

तुमच्यासाठी शुभ वेळ

पश्चिमी विचारानुसार सूर्य वृषभ राशीत 21 एप्रिल पासून ते 21 मे पर्यंत आणि तूळ राशीत 24 सप्टेंबर पासून ते 13 ऑक्टोबर पर्यंत असतो. हिंदू विचारानुसार हे कालावधी 13 मे ते 14 जून आणि 17 ऑक्टोबर ते 13 नोव्हेंबर पर्यंत आहेत. या राशी शुक्राच्या स्वामित्वाखाली आहेत आणि 14 मार्च ते 12 एप्रिल म्हणजे मीन राशीमध्ये, शुक्र उत्कर्षामध्ये असतो. त्यामुळे वरील उल्लेख केलेले कालावधी मूलांक 6 असलेल्या लोकांसाठी कोणतेही नवीन किंवा महत्वाचे कार्य सुरु करण्यासाठी शुभ असतात.

शुभ गायत्री मंत्र

शुक्राचे लाभदायक प्रभाव वाढविण्यासाठी तुम्ही शुक्र गायत्री मंत्राचा सकाळी 11, 21 किंवा 108 वेळा जप केला पाहिजे. मंत्र : . || 'ओम भृगुजय विदमाहे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्' ||

काळसर्प दोष



ज्या वेळी व्यक्तीच्या कुंडलीतील राहू व केतू ग्रहांच्या मधोमध अन्य ग्रहांचा समावेश होतो त्या वेळी कालसर्प दोषाचा निर्माण होतो कारण कुंडलीतील एका भावात राहू व दुसऱ्या भावात केतू स्थानापन्न झाल्याने, इतर ग्रहां कडून होणारी फलप्राप्ती स्थगित होते, ह्या दोन्ही ग्रहां मध्ये बाकी ग्रह अडकून जातात व व्यक्ती साठी समस्या उत्पन्न करतातह्या दोषा मुळे, कामात बाधा निर्माण होणे, नौकरीत अडचण येणे , लग्न कार्यात विलंब होणे व आर्थिक समस्या ईत्यादी त्रास उदभवतात

कालसर्प दोषाने पीडित असलेल्या सर्व व्यक्तींवर ह्या दोषाचा समान प्रभाव पडत नाही . कोणत्या

भावा मध्ये कोणती रास आहे व त्या मध्ये कोण कोणते ग्रह कुठे स्थित आहेत व त्यांची शक्ती कितपत आहे ह्या सर्व बाबींचा परिणाम पीडित व्यक्तीवर पडतो. म्हणूनच, कालसर्पयोग असल्यास भयभीत होण्याची आवश्यकता नसून त्या बदलचे सखोल ज्योतिषीय विश्लेषण करवून घेणे व त्याच्या प्रभावां बदल तपशीलवार माहिती मिळवणे अधिक उचित ठरेल.कालसर्प योग जरी त्रासदायक मानला जात असला तरी विधिवत प्रकारे त्याचा उपाय केल्याने ह्या योगाचे सिद्ध योगात रूपांतर होऊ शकते.

अनंत

कुळिक

वासुकी

शंखपाल

पद्म

महापद्म

तक्षक

कर्कोटक

शंखचूड

घातक

विषधर

शेषनाग

तुमच्या जन्मकुंडलीतील काळसर्पयोग



काळसर्प योगाची उपस्थिती

तुमची कालसर्प दोषाची दिशा उतरती आहे, जी जास्त शक्तिशाली नसते. तुमच्या जन्मपत्रिकेवर कालसर्प दोषाचा पूर्ण प्रभाव आहे.

काळसर्प नांव

शंखचूड

दिशा

पूर्ण उतरता

काळसर्प दोषाचे फळ

तुमच्या कुंडलीमध्ये शंखचूड कालसर्प योग आहे. यामुळे आयुष्यात अडथळे आहेत आणि जातकाला पुढे जाण्यासाठी संघर्ष करावा लागेल. तथापि, नंतर अडथळे दूर होतील. तुमच्या नोकरीमध्ये अडथळे येऊ शकतात आणि पदावनती होऊ शकते. निवृत्ती नाकारता येत नाही. व्यवसायामध्ये अखंडित हानी होते. जातकाचे मित्र त्याला फसवण्यास पुनःपुन्हा प्रयत्न करतील. जातकाला कदाचित आई वडिलांचे प्रेम मिळणार नाही. जातकाला मामा किंवा मेहुण्यांकडून फसवणूक सोसावी लागेल. कालसर्प योगामुळे जातकाला खूप वेळा आजारपणाचा त्रास होईल ज्यामुळे पैशाची हानी होईल आणि जातकाला त्रास सोसावा लागेल परंतु गोष्टी नंतर सुधारतील. कालसर्प योगामुळे जातकाला प्रांतामध्ये त्रास होईल आणि शासकीय अधिकाऱ्यांसोबत मतभेद होतील. जातकाला कायद्यातील शिक्षा होऊ शकते. वैवाहिक जीवन दुःखदायक व अशांत असेल. कौटुंबिक जीवन अशांत राहते, शांतता आणि आनंद अनुपस्थित राहतील. विविध प्रकारच्या उद्योगावर जातक आपले हात अजमावू पाहतो पण यश दूरच राहते. त्याची प्रतिष्ठा आणि सन्मान साधारण आहेत.

काळसर्प दोषावर उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्र घरात स्थापन करावे त्याची नियमित पूजा करावी
- हनुमान चालीसा १०८ वेळा पठण करावी।
- रुद्रभषेक- शंकराचा रुद्र अभिषेक अथवा पंचोपचार पूजन, उज्जैन च्या महाकालेश्वर मंदिरात , काशी विश्वनाथ मंदिरात अथवा कोणत्याही ज्योतिर्लिंग शिव मंदिरात करावे
- शुभ मुहूर्त पाहून वाहत्या पाण्यात तीन वेळा कोळसा सोडावा
- विद्यार्थी वर्गाने सरस्वती मातेचे विधिवत पूजन करावे व सरस्वती बीज मंत्राचा एक वर्ष जाप करावा
- महामृत्युंजय मंत्राचा जाप ११ माळा रोज ,राहू व केतूची दशा अंतर्दशा असे पर्यंत करावा व दर शनिवारी श्री शनिदेवाला तेलाभिषेक करावा आणि मंगळवारी हनुमंताला वस्त्र चढवावे .
- श्रावण मासात ३० दिवस शंकराला अभिषेक करावा
- एक वर्षभर गणपती अथर्वशीर्षाचे नित्य पठण करावे
- श्रावणात रोज अंधोळीनंतर ११ माळी नमः शिवाय या मंत्राचा जाप करून शंकराला बेल पत्र व गायीचे दूध आणि गंगाजल अर्पण करावे व सोमवारी उपवास घरावा



मंगळ दोष म्हणजे काय?

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित

होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते हैं। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वांरिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

एकूण मंगळ टक्केवारीमध्ये

18%

मांगलिक फळ

तुमच्या कुंडलीत मांगलिक दोष आहे परंतु तो कमी प्रभावी आहे. मांगलिक दोषाचे काही उपाय करून त्याचा प्रभाव आणखी कमी करता येईल.



गृह/भाव वर आधारित

तुमच्या जन्म पत्रिकेत सूर्य प्रथम घरात स्थित आहे.



दृष्टीवर आधारित

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील आठव्या घरावर शनी ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेत पहिल्या घरावर शनी या ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेत पहिल्या घरावर राहू या ग्रहाची दृष्टी आहे.

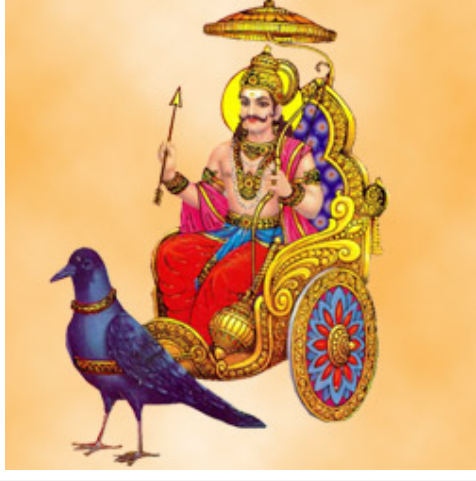
मंगळ ग्रह तुमच्या जन्म पत्रिकेत दुसऱ्या घरावर दृष्टी ठेऊन आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील सातव्या घरावर सूर्य ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील सातव्या घरावर केतू ग्रहाची दृष्टी आहे.

मंगळ दोषाचे उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुःशुभभाव में लाभ मिलता है |
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |



साडेसाती दोष म्हणजे काय?

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साडे साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साडे सात वर्ष का समय लेता है जो साडे साती कही जाती है।

सामान्य अर्थ में साडे साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छः मास।

साडे साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमें कठिनाई और मुश्किल हालात जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साडे साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साडे साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले

जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

तुमच्या कुंडलीतील साडेसातीची उपस्थिती



नाही, सध्या तुमची साडेसाती सुरु नाही आहे.

| | |
|--------------------|-----------|
| विचार करायचे दिवसं | 23-4-2017 |
| शनि राशि | धनु |
| चंद्र राशी | कर्क |
| वक्री शनी ? | हो |

रत्न उपाय सूचना

प्राचीन काळापासून, हे मान्यताप्राप्त आहे कि रत्ने, एक अलंकारीक अभीव्यक्ती असण्याखेरीज, उपचार करण्याच्या आणि रक्षण करण्याच्या दैवी शक्तीने समृद्ध आहेत. वैदिक ज्योतिषानुसार, ग्रह सूक्ष्म उर्जा प्रसारित करतात ज्यांचा आपल्या जन्म कुंडलीमध्ये असलेल्या त्यांच्या स्थितीवर अवलंबून आपल्या जीवनावर अनुकूल किंवा प्रतिकूल परिणाम प्रतिध्वनित होतो. प्रत्येक ग्रहाचे एकमेव विशिष्ट असे त्याच्याशी सुसंगत असणारे ज्योतिष रत्न आहे जे त्या ग्रहाप्रमाणेच तशाच वैश्विक रंगाची उर्जा उत्सर्जित करते. रत्ने सकारात्मक किरणे प्रतिबिंबित करून किंवा नकारात्मक किरणांचे शोषण करून कार्य करतात. योग्य रत्न वापरण्याने त्याच्याशी सुसंगत ग्रहाचा ते वापरणाऱ्यावर सकारात्मक परिणाम होण्यामध्ये वृद्धी होऊ शकते कारण रत्न सकारात्मक स्पंदने वेगळी करून घेते आणि फक्त त्यांनाच ते वापरणाऱ्याच्या शरीरात प्रवेश करण्यास अनुमती देते.

जीवन रत्न



मूंगा

ऍसेन्डन्ट किंवा लग्न हे शरीर आणि त्याच्याशी संबंधित असलेले सर्व काही ठळकपणे दर्शवते, उदा. आरोग्य, दीर्घायुष्य, नांव, प्रतिष्ठा, जीवनमार्ग, इत्यादी. थोडक्यात, त्याच्यामध्ये संपूर्ण जीवनाचे सार सामावलेले आहे. त्यामुळे लग्नेश बरोबर सुसंगत असलेले रत्न, ऍसेन्डन्टचा स्वामी याला जीवनरत्न म्हणजे लाइफस्टोन असे म्हटले जाते.

कारक रत्न



पुखराज

कुंडलीतील पाचवे घर हे अजून एक शुभ घर आहे. पाचवे घर बुद्धिमत्ता, उच्च शिक्षण, मुले, अनपेक्षित लाभ इत्यादी ठळक दर्शवणारे आहे. हे घर पूर्व पुण्याईच्या कर्मांचे स्थान म्हणजे भूतकाळातील पुण्यकर्मांचे सुद्धा घर आहे. त्यामुळे ते शुभ घर म्हणून मानले जाते. पाचव्या घराच्या स्वामीशी सुसंगत असणाऱ्या रत्नाला लाभ रत्न असे म्हटले जाते.

भाग्य रत्न



मोती

कुंडलीतील नवव्या घराला भाग्यस्थान म्हटले जाते म्हणजे नशीब किंवा दैवाचे घर. हे घर सुदैव, यश, गुणवत्ता, प्राप्ती, ज्ञान इत्यादीशी संबंधित आहे. हे घर ती कर्म फळे दर्शवते जी एखादी व्यक्ती त्याने त्याच्या पूर्वजन्मांमध्ये केलेल्या पुण्यकर्मांमुळे उपभोगू शकेल. नवव्या घराच्या स्वामीशी सुसंगत असणाऱ्या रत्नाला भाग्यरत्न म्हणजे लकी स्टोन असे म्हटले जाते. हे रत्न वापरल्याने भाग्य हा घटक बळकट होतो.

जीवन रत्न

जीवन रत्न - मूंगा



पर्याय लाल सुलेमानी
बोट तर्जनी
भार 6 - 10.25 कैरेट

दिवस मंगळवार
अधिदेवता मंगळ
धातु सुवर्ण



वर्णन

लाल पोवळे हे मंगळ ग्रहाचे रत्न आहे. लाल पोवळे परिधान केल्याने आपण शूर होतो आणि आपल्या शत्रूंचा पराभव होतो. लाल पोवळे दुष्ट आत्मा, गुमता व वाईट स्वप्नांपासून रक्षण करते.



वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी मंगळवारी सकाळी सूर्योदयाच्या १ तासानंतर लाल पोवळे परिधान करावे.



बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर लाल पोवळ्याची अंगठी उजव्या हाताच्या तर्जनीमध्ये घालावी.



वजन आणि धातु

लाल पोवळे हे ६ कॅरेटपेक्षा जास्त वजनाचे घातले पाहिजे. ते तांबे मिश्रित सोन्याच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे की रत्नाचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



मंत्र

पएकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले की लाल पोवळे रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. या रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.
ॐ क्रां क्रीं क्रीं सः भौमाय नमः



पर्याय

लाल पोवळे रत्नाला पर्याय म्हणून सूर्यकांत मणी , मूंगा, रक्ताश्म वापरू शकता.



इशारा

लाल पोवळे कधीही पाचू, हिरा, नीलम, गोमेद, व वैदुर्य ही रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.



प्राण प्रतिष्ठा

लाल पोवळे परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.

कारक रत्न

कारक रत्न - पुष्कराज



| | | | |
|--------|----------------|----------|---------|
| पर्याय | टोपाझ | दिवस | गुरुवार |
| बोट | तर्जनी | अधिदेवता | गुरु |
| भार | 4 - 5.25 कैरेट | धातु | सुवर्ण |



वर्णन

पुष्कराज हे गुरुचे रत्न आहे. पुष्कराज परिधान केल्याने चांगले आरोग्य, ज्ञान, मालमत्ता, दीर्घायुष्य, नावलौकिक, पुरस्कार व प्रसिद्धी मिळते. पुष्कराज वाईट आत्म्यापासून रक्षण करतो.



वजन आणि धातु

पुष्कराज हा तीन कैरेटपेक्षा जास्त वजनाचा घातला पाहिजे. तसेच तो ६, ११, १५ कैरेट्स चा कधीच नसावा. तो सोन्याच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे कि पुष्कराजचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी गुरुवारी सकाळी पुष्कराज परिधान करावा.



मंत्र

एकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले कि पुष्कराज रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. पुष्कराज रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.
ॐं ग्रां ग्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः



प्राण प्रतिष्ठा

पुष्कराज परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.



बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर अंगठी उजव्या हाताच्या तर्जनीमध्ये घालावी.



पर्याय

पुष्कराजला पर्याय म्हणून पिवळा मोती, पिवळा गोमेद, पिवळा टूर्मलाईन, टोपाझ किंवा स्फटिक टोपाझ वापरू शकता.



इशारा

पुष्कराज कधीही हिरा, नीलम, गोमेद व वैदुर्य हि रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.

भाग्य रत्न - मोती



| | |
|--------|--------------------|
| पर्याय | चंद्र मणी |
| बोट | अनामिका या कनिष्ठा |
| भार | 5 - 7.25 कैरेट |

| | |
|----------|--------|
| दिवस | सोमवार |
| अधिदेवता | चंद्र |
| धातु | |



वर्णन

मोती हे चंद्राचे रत्न आहे. मोती परिधान केल्याने संपत्ती, प्रसिद्धी व चेतना मिळते. मोती घालणाऱ्या माणसाला बुद्धिमत्ता व दीर्घायुष्य मिळते.



वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी सोमवारी सकाळी मोती परिधान करावा.



बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर मोत्याची अंगठी उजव्या हाताच्या तर्जनीमध्ये घालावी.



वजन आणि धातु

मोती हा २, ४, ६ किंवा ११ कैरेट वजनाचा घातला पाहिजे. तसेच तो चांदीच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे कि मोत्याचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



मंत्र

पएकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले कि मोती रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. मोती रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.

ॐ श्रां श्रीं श्रीं सः चन्द्राय नमः



पर्याय

मोत्याला पर्याय म्हणून चंद्रमणी व सफेद पुष्कराज वापरू शकता.



इशारा

मोती कधीही हिरा, नीलम, पाचू व वैदुर्य हि रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.



प्राण प्रतिष्ठा

मोती परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.



लग्न फळ - वृश्चिक

| | |
|--------------------|---------------------|
| स्वामी | मंगळ |
| प्रतीक | वृश्चिक |
| वैशिष्ट्ये | ओलसर, स्थावर, उत्तर |
| भाग्यशाली रत्न | लाल पोवळे |
| व्रत करण्याचे दिवस | मंगळवार |

**देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत् ||**

वृश्चिक लग्न असणाऱ्या लोकांचा गुप्तता राखणे, खोल, अंतर्मुख, गूढ, नवचैतन्य प्राप्त करणे किंवा भ्रष्ट होणे, संकोची, समजण्यास दुर्लभ, धीट, दुराग्रही, चिकाटी असणारे, विचारात हट्टी असणारे, सृजनशील, स्व-निर्भर, स्व-नियंत्रित (अपवाद कदाचित फक्त भावनावश असणारे), आणि निःशब्द असण्याकडे कल असतो.

आध्यात्मिक ज्योतिषी इसाबेल हिकले यांच्या म्हणण्यानुसार, कोणताही अविकसित आत्मा वृश्चिक लग्नासह जन्म घेत नाही. हे एक शक्तीशाली लग्नाचे चिह्न आहे.

“ ते अशा रणभूमीचे प्रतिनिधित्व करते जेथे अधिक उच्च आणि नीच आत्मे मरणांतिक युद्धासाठी येतातच. ते सुसंगत केले गेले पाहिजेत आणि नीच आत्म्यांना अपरिहार्यपणे मरावे लागते आणि उच्च आत्मे आणि त्यांच्यात वसणाऱ्या परमेश्वराला वाट करून द्यावी लागते आणि त्यांची आज्ञा पाळावी लागते.

शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक आणि आत्मिक सर्व पातळ्या समाविष्ट आहेत. तुम्ही वरवर शांत दिसून येता, परंतु आतमध्ये तुम्ही तीव्रतेने भावनात्मक असू शकता.

खोल पाणी शांत असते, जसे म्हटले जाते. तुमचा निःशब्द राहाण्याकडे कल असतो, नेहेमी इतरांच्या प्रेरणा माहिती करून घेण्याच्या इच्छेने, परंतु कधीही तुमच्या स्वतःच्या प्रकट करणार नाही.

तुम्हाला गुप्तहेर किंवा फेरेटसारखे शोधून काढायला आवडते. तुम्हाला सर्व काही माहिती असायला हवे, सर्व काही कसे आणि का. तुमच्याकडे उत्तम निर्धार आणि बळ असते, कोणत्याही प्रतिस्पर्धावर मात करण्यासाठी पुरेसे, अगदी तुमच्या स्वतःवर सुद्धा.

“ तुम्ही तिरस्कार, स्वामित्वाची भावना आणि मत्सर काबूत ठेवणे आवश्यक आहे. येथे गुढविद्या, मृत्यु, लैंगिक संबंध किंवा उपचारांविषयी आवड, व्यापून जाणे, उत्सुकता आणि /किंवा क्षमता असू शकते.

तुम्ही एक सैतान होऊ शकता किंवा देवदूत, गरूड किंवा विषदंश करणारा विंचू. शिकण्याचा आध्यात्मिक घडा: क्षमाशीलता. मंगळ आणि प्लुटो वृश्चिक राशीवर राज्य करतात त्यामुळे तुमच्या कुंडलीत मंगळ आणि प्लुटोचे महत्वाचे स्थान असेल.



शिकण्याचा आध्यात्मिक घडा



माफी

सकारात्मक लक्षण



शक्तिशाली

वचनबद्ध

हुशार

कल्पनारम्य

नकारात्मक लक्षण



मत्सरी

क्षमा ना करणारा

निश्चयी

गुप्त

Vedic Rishi Astro Pvt. Ltd.

astrologyAPI



Vedic Rishi does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your astrology websites or astro-matching apps and provides you with simple APIs to create awesome user interfaces for your users

Website : <https://www.vedicrishiastro.com>

Email : mail@vedicrishiastro.com

Mobile : +91 1212 1212 12

Ladline : +91- 221232 22